मध्यप्रदेश मुस्लिम त्योहार कमेटी

प्रदेश अध्यक्ष — ज़ीशान रहमान (शानू)

भोपाल, मध्य प्रदेश

9770330790 | peoplesrepresentative.shanu@gmail.com

सभी धर्मों का सम्मान हमारा संकल्प

क्रमांक : MPMTC/20104/2026 दिनांक : 03 / 11 / 2026

प्रति,

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय,
भारतीय जनता पार्टी, नई दिल्ली।

विषयः भाजपा के विभिन्न नेताओं द्वारा समय–समय पर मुस्लिम समाज, धार्मिक आस्था, गरबा, नवरात्रि एवं त्योहारों को लेकर दिए गए विवादित बयानों पर पार्टी नेतृत्व से जवाब एवं आधिकारिक रुख सार्वजनिक करने के संबंध में।

महोदय,

मैं मध्यप्रदेश मुस्लिम त्योहार कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में आपका ध्यान भारतीय जनता पार्टी से जुड़े विभिन्न नेताओं द्वारा अलग–अलग समय पर मुस्लिम समाज, इस्लाम, पैगंबर मोहम्मद साहब, मुस्लिम नागरिकों, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक भागीदारी को लेकर दिए गए विवादित बयानों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

मेरा भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व से सबसे पहला और सीधा सवाल हैकृयदि आपकी पार्टी के नेताओं को मुस्लिम समाज से इतनी परेशानी है, यदि उन्हें मुसलमानों की धार्मिक आस्था, ईद, गरबा, नवरात्रि और दूसरे समाजों के त्योहारों में उनकी भागीदारी से इतनी आपत्ति है, तो भाजपा सार्वजनिक पत्र जारी कर स्पष्ट घोषणा करे कि उसे देश के मुसलमानों के वोट नहीं चाहिए।

देश में लोकतंत्र है और प्रत्येक राजनीतिक दल को अपनी विचारधारा रखने का अधिकार है। लेकिन जब बार–बार सार्वजनिक मंचों से किसी एक समुदाय को निशाना बनाने वाले बयान सामने आते हैं, तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह केवल संबंधित नेताओं की व्यक्तिगत राय है या पार्टी नेतृत्व भी ऐसी बयानबाजी पर कोई स्पष्ट नीति रखता है।

समय–समय पर समाचार माध्यमों में सामने आए कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं –

1. **वर्ष 2019 – योगी आदित्यनाथः** चुनाव प्रचार के दौरान मुस्लिम मतदाताओं के संदर्भ में कथित तौर पर ''ग्रीन वायर'' शब्द का इस्तेमाल किए जाने को लेकर विवाद हुआ। इस बयान के बाद निर्वाचन आयोग ने उनके चुनाव प्रचार पर तीन दिन की रोक लगाई थी।

2. **वर्ष 2022 – नूपुर शर्माः** टीवी डिबेट के दौरान पैगंबर मोहम्मद साहब को लेकर की गई टिप्पणी पर देश–विदेश में विवाद हुआ। इसके बाद भाजपा ने उन्हें पार्टी से निलंबित किया।

3. **वर्ष 2022 कृ नवीन जिंदलः** पैगंबर मोहम्मद साहब के संबंध में सोशल मीडिया पर की गई टिप्पणी के बाद भाजपा ने उनकी प्राथमिक सदस्यता समाप्त कर दी।

4. **वर्ष 2022 – साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुरः** भोपाल की तत्कालीन भाजपा सांसद ने गरबा पंडालों में मुस्लिम युवकों के प्रवेश पर रोक लगाने की मांग की थी। उन्होंने धार्मिक कार्यक्रमों के आसपास मुस्लिम दुकानों और सामान पर भी प्रतिबंध लगाने जैसी बात कही थी। क्या धार्मिक उत्सवों में किसी नागरिक की भागीदारी को उसकी धार्मिक पहचान के आधार पर इस तरह निशाना बनाना उचित है?

5. **वर्ष 2022 – उषा ठाकुरः** मध्यप्रदेश की तत्कालीन संस्कृति मंत्री ने गरबा पंडालों में पहचान पत्र देखकर प्रवेश देने की बात कही थी। उन्होंने गरबा आयोजनों को कथित तौर पर लव जिहाद से जोड़ते हुए आयोजकों को सतर्क रहने की सलाह दी थी।

निरंतर.....2

6. **वर्ष 2022 – हरिभूषण ठाकुर बचौल:** बिहार के भाजपा विधायक ने मुस्लिम नागरिकों के मतदान अधिकारों को लेकर विवादित बयान दिया था। उनके बयानों पर सार्वजनिक स्तर पर आपत्ति दर्ज हुई थी।

7. **वर्ष 2024 – प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी:** राजस्थान के बांसवाड़ा में चुनावी सभा के दौरान मुसलमानों के संदर्भ में ''घुसपैठिए'' शब्द और अधिक बच्चे पैदा करने संबंधी टिप्पणी को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक विवाद हुआ।

8. **वर्ष 2024 – योगी आदित्यनाथ:** चुनावी भाषणों में कांग्रेस पर शरिया लागू करने की मंशा का आरोप लगाने और औरंगजेब का संदर्भ देते हुए बुलडोजर संबंधी टिप्पणी करने की खबरें सामने आईं।

9. **वर्ष 2025 – केशव उपाध्ये:** महाराष्ट्र भाजपा के मुख्य प्रवक्ता ने नवरात्रि के दौरान गरबा में मुस्लिमों की भागीदारी पर सवाल उठाते हुए कहा कि यदि उनका धर्म मूर्ति पूजा की अनुमति नहीं देता तो उन्हें गरबा में भाग नहीं लेना चाहिए। उन्होंने इसे धार्मिक परंपराओं और सामाजिक सद्भाव से जोड़कर अपनी बात रखी।

10. **वर्ष 2025 – पी.सी. जॉर्ज:** केरल के नेता पी.सी. जॉर्ज पर एक टीवी चर्चा में मुस्लिम समुदाय को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी करने का आरोप लगा। इस बयान के बाद विवाद और कानूनी शिकायतों की खबरें सामने आईं।

11. **वर्ष 2026 – उषा ठाकुर:** नवरात्रि और गरबा पंडालों में गैर–हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर उनका बयान सामने आया। उन्होंने गरबा में गैर–हिंदुओं की भागीदारी पर आपत्ति जताई और इस संबंध में कथित तौर पर कुछ आंकड़े भी दिए, जिनके समर्थन में आधिकारिक स्रोत प्रस्तुत नहीं किए गए।

12. **वर्ष 2026 – रामेश्वर शर्मा:** भोपाल में गरबा में मुस्लिम युवकों की भागीदारी को लेकर उन्होंने कथित तौर पर कहा कि मुस्लिम युवक अपनी बहनों और बेटियों को भी साथ लेकर आएं और "हमारे छोरे तैयार हैं।" इस बयान पर भी सार्वजनिक विवाद हुआ। इसके बाद उन्होंने अपनी टिप्पणी को मां जगदंबा की पूजा और गरबा की धार्मिक परंपरा से जोड़कर स्पष्ट किया।

13. **वर्ष 2026 – संजय उपाध्याय और गोपाल शेट्टी:** गरबा आयोजनों में गैर–हिंदुओं के प्रवेश पर रोक लगाने तथा गरबा में भाग लेने वालों के लिए तिलक और धार्मिक रीति–रिवाजों जैसी शर्तों को लेकर उनके बयान भी समाचारों में सामने आए।

14. **वर्ष 2026 – रामेश्वर शर्मा:** भोपाल के स्वदेशी मेले में ईद और चांद को लेकर प्रसारित वीडियो में उनके कथित बयानकृ"सूरज हमारा है और चांद हमारा है, मुसलमान भी अब हमसे पूछकर ईद मनाएंगे"कृको लेकर मुस्लिम समाज में नाराजगी है। इसके अतिरिक्त भगवान शंकर, गुफा और चांद दिखाई देने को लेकर भी कथित टिप्पणी सामने आई है।

उपरोक्त उदाहरण सार्वजनिक समाचार रिपोर्टों में दर्ज बयानों और विवादों पर आधारित हैं। हमारा उद्देश्य किसी व्यक्ति को बिना जांच दोषी ठहराना नहीं, बल्कि पार्टी नेतृत्व से यह जानना है कि इन बयानों पर उसका आधिकारिक रुख क्या है और वह अपने नेताओं की सार्वजनिक जवाबदेही कैसे सुनिश्चित करेगा।

महोदय, गरबा और नवरात्रि हिंदू समाज की आस्था के महत्वपूर्ण पर्व हैं और हम उनका पूरा सम्मान करते हैं। लेकिन भारत की साझा संस्कृति में अलग–अलग धर्मों के लोग एक–दूसरे के त्योहारों में सद्भाव के साथ शामिल होते आए हैं। यदि कोई मुस्लिम गरबा में शामिल होना चाहता है तो यह उसकी व्यक्तिगत पसंद है और यदि कोई हिंदू ईद के कार्यक्रम में शामिल होता है तो उसका भी सम्मान होना चाहिए। किसी भी समुदाय को दूसरे के त्योहार में शामिल होने या न होने के लिए राजनीतिक दबाव का सामना नहीं करना चाहिए।

निरंतर.....3

इसी प्रकार हिजाब, मस्जिद, मदरसा, अजान, हलाल और मुस्लिम धार्मिक परंपराओं को लेकर भी अलग–अलग समय पर राजनीतिक विवाद और सार्वजनिक बयानबाजी सामने आती रही है। इन विषयों पर भी पार्टी नेतृत्व को स्पष्ट करना चाहिए कि वह धार्मिक स्वतंत्रता और संवैधानिक अधिकारों के सम्मान के पक्ष में किस प्रकार खड़ा है।

महोदय, मेरे कुछ सीधे सवाल हैं :–

क्या भाजपा नेतृत्व इन बयानों को अपनी पार्टी की विचारधारा का हिस्सा मानता है?

यदि नहीं, तो पार्टी ऐसे बयानों पर स्पष्ट और समयबद्ध संगठनात्मक जवाबदेही क्यों तय नहीं करती?

क्या भाजपा के नेताओं के लिए सभी धर्मों और समुदायों की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करना अनिवार्य है?

क्या पार्टी नेतृत्व यह सुनिश्चित करेगा कि गरबा, नवरात्रि, ईद और दूसरे त्योहारों को लेकर किसी समुदाय को अपमानित करने वाली बयानबाजी न हो?

क्या भाजपा नेतृत्व सार्वजनिक रूप से यह स्पष्ट करेगा कि मुस्लिम समाज के प्रति उसकी वास्तविक नीति और सोच क्या है?

<u>और सबसे महत्वपूर्ण सवाल –</u>

यदि भाजपा को मुस्लिम समाज के वोट नहीं चाहिए, तो पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक पत्र जारी कर इसकी स्पष्ट घोषणा कर दे। देश के करोड़ों मुसलमानों को यह जानने का अधिकार है कि भाजपा उन्हें किस नजरिए से देखती है।

महोदय, मुसलमान इस देश के नागरिक हैं। वे किसी राजनीतिक दल की कृपा से नहीं, बल्कि संविधान द्वारा दिए गए समान अधिकारों के आधार पर इस देश में रहते हैं। उन्हें अपने धर्म का पालन करने, ईद मनाने, मस्जिद में इबादत करने और अपनी धार्मिक परंपराओं को निभाने के लिए किसी विधायक या राजनीतिक दल की अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

हम किसी राजनीतिक दल से विशेष कृपा नहीं मांग रहे हैं। हमारी अपेक्षा केवल इतनी है कि मुस्लिम समाज को भी वही सम्मान, सुरक्षा और संवैधानिक अधिकार मिलें, जो देश के प्रत्येक नागरिक को प्राप्त हैं।

हमारा संदेश स्पष्ट हैकृदूसरे धर्मों के त्योहारों का सम्मान करना हमारी संस्कृति है, लेकिन अपनी धार्मिक आस्था और नागरिक सम्मान से समझौता करना हमारी मजबूरी नहीं है।

चांद और सूरज किसी राजनीतिक दल की संपत्ति नहीं हैं। ईद किसी विधायक की अनुमति से नहीं, हमारी धार्मिक आस्था और परंपरा के अनुसार मनाई जाती है।

अतः आपसे आग्रह है कि इस पत्र को गंभीरता से लेते हुए भाजपा का आधिकारिक पक्ष सार्वजनिक करें और संबंधित नेताओं की बयानबाजी पर संगठनात्मक स्तर पर स्पष्ट जवाबदेही तय करें।

अब सवाल टालने का नहीं, जवाब देने का है। यदि भाजपा को मुस्लिम समाज के वोट नहीं चाहिए, तो सार्वजनिक पत्र जारी कर इसकी घोषणा करे।

सादर,

ज़ीशान रहमान (शानू)
प्रदेश अध्यक्ष
मध्यप्रदेश मुस्लिम त्योहार कमेटी
मुख्य कार्यालय– 4, शानू शेबू मंजिल,
मस्जिद कमनीग्रान, इतवारा रोड, भोपाल
मोबाइलः 9770330790